नीतीश समझ नहीं पा रहे हैं कि मीरा की उम्मीदवारी उनके खिलाफ है या भाजपा के!

कांग्रेस की अगुवाई में विपक्ष ने राष्ट्रपति पद के लिए मीरा कुमार के नाम की घोषणा कर अचानक राजनीतिक सरगर्मी बढ़ा दी है। इसके साथ ही मीरा कुमार सोशल मीडिया पर ट्रेंडिंग टॉपिक बन गई हैं। पूर्व प्रधानमंत्री जगजीवन राम की पुत्री और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार लंबे अरसे तक कांग्रेस का दलित चेहरा रही हैं। वहीं एनडीए के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रामनाथ कोविंद भी दलित समुदाय से आते हैं। सोशल मीडिया पर राष्ट्रपति चुनाव को दलित बनाम दलित चुनाव बताते हुए कई टिप्पणियां आई हैं। इस बहस पर इंजीनर्ड का चुटकी लेते हुए ट्वीट है, मैं कभी राष्ट्रपति नहीं बन सकता क्योंकि मेरा जन्म दलित परिवार में नहीं हुआ। विपक्ष की इस घोषणा को कई लोगों ने काफी चतुराई भरा फैसला बताया है।

सोशल मीडिया पर कांग्रेस समर्थकों और भाजपा विरोधियों ने कोविंद के मुकाबले मीरा कुमार को राष्ट्रपति पद का बेहतर प्रत्याशी बताते हुए कई टिप्पणियां की हैं। गौरव पांधी ने ट्विटर पर लिखा है, मीरा कुमार के रूप में भारत पहली बार किसी दलित महिला को राष्ट्रपति चुन सकता है। उनके खाते में कई उपलब्धियां हैं। वे पहली महिला लोकसभा अध्यक्ष थीं, पांच बार सांसद रह चुकी हैं और केंद्रीय मंत्री भी रही हैं।

मीरा कुमार को काफी सौम्य नेता माना जाता है। लोकसभा अध्यक्ष रहते हुए वे बेहद शालीनता के साथ सदस्यों से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए अक्सर 'बैठ जाइए, बैठ जाइए...' कहा करती थीं। यह डायलॉग उनकी छवि के साथ इस तरह चस्पा है कि सोशल मीडिया पर आज इसके जिक्र के साथ कई लोगों ने मजेदार टिप्पणियां की हैं। फेसबुक पर अनुराग मुस्कान ने लिखा है, रिपोर्टर, मीरा कुमार से- मैडम, रामनाथ कोविंदजी से आप कुछ कहना चाहेंगी? मीरा कुमार- जी, इतना ही कि बैठ जाइए, बैठ जाइए प्लीज।

एनडीए की तरफ से रामनाथ कोविंद के नाम की घोषणा के बाद विपक्षी नेताओं में से सबसे पहले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उनको समर्थन देने की बात कही थी। सोशल मीडिया पर चर्चा है कि विपक्ष की ओर से मीरा कुमार को राष्ट्रपति चुनाव में उम्मीदवार बनाने के बाद नीतीश कुमार धर्मसंकट में फंस गए हैं।

उन्होंने दलित समुदाय से आने और बिहार का राज्यपाल होने का तर्क देकर कोविंद का समर्थन किया था। चूंकि मीरा कुमार भी दलित समुदाय से आती हैं और बिहार की ही निवासी हैं तो इस लिहाज से अब नीतीश के लिए उनके विरोध में कोविंद का समर्थन करना काफी दुविधा भरा फैसला होगा। इस मसले पर सर्वप्रिया सांगवान ने चुटकी ली है, समझ में नहीं आ रहा है कि मीरा कुमार को भाजपा के लिए उतारा गया है या नीतीश कुमार के लिए।

आज के इस राजनीतिक घटनाक्रम पर सोशल मीडिया में आईं कुछ और प्रतिक्रियाएं-

राजदीप सरदेसाई- रामनाथ कोविंद बनाम मीरा कुमार? क्या हम भारत के लिए सबसे बेहतर राष्ट्रपति चुन रहे हैं या जातिगत गणित साध रहे हैं?

आशीष भारद्वाज- दोनों उम्मीदवार दलित नहीं, महज 'कार्ड' हैं। दलित जहां थे, वहीं हैं।

वीके शर्मा- यूपीए की राष्ट्रपति उम्मीदवार घोषित खानदानी दलित हैं, जबकि एनडीए के उम्मीदवार खानदानी नहीं हैं, उनका खानदान उनसे ही शुरू होगा।

स्नेहा बाबा- नीतीश कुमारजी अब आप क्या करेंगे, विपक्ष का साथ देंगे क्या? आप तो ना इधर के रहे, ना उधर के...

संजय कुमार- आ गईं मीरा कुमार, अब सोचें नीतीश कुमार। (सत्याग्रह)

एक भक्त दो हजार साल से हिमालय पर तपस्या कर रहे थे, अंत में श्रीविष्णु प्रसन्न हुए, प्रकट होकर बोले

मांगो बच्चा क्या वरदान मांगते हो?

भावविभोर हो भक्त बोला- भगवन मुझे भारत का राष्ट्रपति बना दो।

श्रीविष्णु बोले, तथास्तु, लेकिन उसके लिए अपना आधार कार्ड नँबर बताओ पहले।

भक्त झुंझलाया बोला- प्रभू दो हजार साल से यहीं जमा हूँ आधार कैसे कहां से लाऊं।

श्रीविष्णु बोले- ये तुम्हे तप आरंभ करने से पहले सोचना था वत्स।

भक्त पुन: भारत लौटकर आधार कार्ड बनवाने के लिए लाइन में लग गया।

-संजय श्रमण जोठे

हद हो गई! अमीर गरीब पहचानने के लिए इस से अलग और कोई सम्मानजनक तरीका नहीं राजस्थान सरकार के पास? राशन दे रहे हैं या जलील कर रहे? जो अमीर करोड़ों का बैंक का रुपया दबाए बैठे हैं डिफाल्टर है उनके बंगलों के आगे भी कुछ इसी तरह का सम्मानजनक लिखवा दे कि वो क्या हैं!

-सारिका तिवारी आनंद

प्रेमचन्द की कहानियों से चमार शब्द को हटाकर एनसीईआरटी ने किताबें छापी हैं- और यह शब्द हटाने का काम एक स्वघोषित मार्क्सवादी समाजशास्त्री जेएनयू के विद्वान ने किया है!

अरुण प्रकाश मिश्र

बेंगलुरु के वैज्ञानिक ड्रोन के सहारे उगायेंगे जंगल

इंडियन इंस्ट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु के वैज्ञानिक प्रोफेसर केपीजे रेड्डी अब ड्रोन सीड बॉम्बिंग के जरिये जंगल उगायेंगे। प्रकृति से काफी लगाव रखने वाले रेड्डी तकनीक के सहारे जंगलों को बचाने और नए जंगल लाने के बारे में काम कर रहे हैं। विदेशों में हुए ड्रोन के बारे में तो आपने कई दफा सुना होगा, लेकिन भारत में ऐसा पहली बार होने जा रहा है। खत्म हो रहे पेड़ पौधों और जंगलों की स्थिति को ध्यान में रखकर रेड्डी ये सकारात्मक कदम उठा रहे हैं, जिसे ट्रायल के तौर पर अपनाया भी जा चुका है।

इंडियन इंस्ट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु के वैज्ञानिक प्रोफेसर केपीजे रेड्डी एक किसान परिवार में पले बढ़े हैं। प्रकृति से काफी लगाव रखने वाले रेड्डी अब तकनीक के सहारे जंगलों को बचाने और नए जंगल लाने के बारे में काम कर रहे हैं।

पिछले महीने जून में विश्व पर्यावरण दिवस के दिन आईआईएससी बेंगलुरू के वैज्ञानिक केपीजे रेड्डी ने एयरोडायनैमिक्स डिपार्टमेंट और वन विभाग के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर ड्रोन के सहारे पौधे बोने की योजना बनाई। ट्रायल के तौर पर उन्होंने कर्नाटक के कोलार जिले में पिनाकिनी नदी के तट को चुना।

इंडियन इंस्ट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु के वैज्ञानिक प्रोफेसर केपीजे रेड्डी का प्रयोग ड्रोन सीड बॉम्बिंग अभी अपने शुरुआती दौर में है, लेकिन इस पहल से जुड़े सभी वैज्ञानिकों का लक्ष्य है, कि जितनी भी खाली और अनुपयोगी जमीनें

पड़ी हैं, वहां पर पेड़-पौधे लगाकर उसे हरा-भरा कर दिया जाए। टीम के मेंबर प्रोफेसर एस एन ओमकार ने बताया कि अभी लगभग 10,000 एकड़ में ड्रोन के सहारे बीज बोने का लक्ष्य रखा गया है और यह हर साल होता रहेगा। प्रोफेसर का कहना है कि कई क्षेत्र इतने दुर्गम हैं कि वहां पहुंचना आसान नहीं है, इसलिए ड्रोन के सहारे वहां बीज पहुंचाए जाएंगे।

एयरोप्लेन या हेलीकॉप्टर के जरिए ऐसा करने में काफी खर्च होता और टेक ऑफ-लैंडिंग में भी काफी समस्या आती है, इसलिए ड्रोन का विकल्प चुना गया।

ड्रोन से एक फायदा यह भी होगा कि पहले देख लिया जाएगा, कि कौन-कौन से इलाके बीज बोने के लिए सबसे उपयुक्त है। उसके बाद ही बीज बिखेरे जाएंगे। प्रो। ओमकार ने बताया कि बीज बिखेरने के बाद हर तीन महीने उसका रिव्यू किया जाएगा, ताकि प्रगति की रिपोर्ट मिल सके। नॉर्थ बेंगलुरु में डोडाबल्लापुर के आस-पास 10,000 एकड़ जमीन खाली पड़ी है वहीं पर ये काम शुरू होगा। गुरिबिंदनौर इलाके में 200 एकड़ में एक साइंस सेंटर बन रहा है। इस साइंस सेंटर की कमेटी के जरिए पहल हो रही है।

इस पहल का नेतृत्व कर रहे डॉ.रेड्डी ने बताया कि पहले एक इलाके को सैंपल के रूप में लिया गया और वहां बीज बिखेरे गए। अब वहां पर देखा जा रहा है कि क्या इस तकनीक के जरिए पेड़ लगाना मुमकिन है या नहीं। उन्होंने बताया कि यह प्रोजेक्ट तीन साल तक तक चलेगा। यह प्रोजेक्ट तो अभी बस एक शुरुआत है। इस के माध्यम से पर्यावरण से जुड़ी कई स्टडी की जाएगी। आने वाले समय में ऐसे ही ड्रोन पर काम होगा जो खुद से बीज बो सकें। प्रो. रेड्डी ने बताया कि यह ट्रायल काफी सफल रहा।

ड्रोन में एक कैमरा भी लगा हुआ है, जिसके सहारे सब कुछ रिकॉर्ड किया जा रहा है। महीने दर महीने रिकॉर्ड इस डेटा का बाद में ऐनालिसिस किया जाएगा। जिससे सही तरीके से बीज बोने में मदद मिलेगी। यह पहल इस समय इसलिए शुरू की गई क्योंकि मानसून आने वाला है और पेड़ों को लगाने के लिए यह सबसे सही वक्त होता है। एक बार बीज जमीन पर पड़ गए तो उन्हें पानी की भी जरूरत होगी जो कि बारिश से पूरी हो जाएगी।

जमीन पर गिरने के बाद बीज बेकार न होने पाएं इसके लिए बीज को खाद और मिट्टी की गेंद में लपेटा गया है। यह सब कोलार वन विभाग की देख रेख में हुआ है। जिन बीजों को बोया जाएगा उनमें से आंवला, इमली और कई सारे स्थानीय मौसम के अनुकूल पौधे चुने गए हैं। प्रो. रेड्डी कहते हैं कि इस प्रोजेक्ट में गांव के स्थानीय लोगों को शामिल किया जाएगा। क्योंकि वे पौधों की अच्छे से देखभाल कर सकते हैं।

प्रोफेसर ने बताया कि यहां पहाड़ी इलाके ज्यादा हैं और वहां जाना संभव नहीं है। सिर्फ पर्वतारोही ही वहां जा सकते हैं। इसीलिए ड्रोन का विकल्प चुना गया। उन्होंने ऐसे ड्रोन विकसित किए हैं जो दस किलो तक का वजन उठा सकते हैं और एक घंटे तक लगातार हवा में उड़ सकते हैं। रेड्डी ने कहा, मुझे नहीं पता कि हमारा ये प्रोजेक्ट कितना सफल होगा, लेकिन मैं बहुत आशावादी हूं और उम्मीद करता हूं कि हमारा ये मिशन ये सफल हो।

हवाई कलाबाजी करते धराशाई हुआ था संजय गाँधी का विमान

पेज 16 से आगे

आपसे असम के बारे में बात करना चाह रही थी। वहां हालात बहुत गंभीर हैं।

चंद्रशेखर ने कहा कि इसके बारे में बाद में बात करेंगे। इंदिरा ने जवाब दिया कि नहीं-नहीं, ये मामला बहुत महत्वपूर्ण है। आश्चर्यचकित चंद्रशेखर की समझ में ही नहीं आया कि कि एक माँ जिसके बेटे का शव बगल के कमरे में पड़ा हुआ है, कैसे असम के बारे में बात कर सकती है?

पुपुल जयकर की किताब के मुताबिक, शाम को जब अटलबिहारी वाजपेई, चंद्रशेखर और हेमवती नंदन बहुगुणा आपस में मिले तो वाजपेयी ने टिप्पणी की, या तो उन्होंने दुख को आत्मसात कर लिया है और या फिर वो पत्थर की बनीं हैं। वो शायद यह सिद्ध करना चाह रही हैं कि इस कठिन घड़ी में भी वह असम और भारत की समस्याओं के बारे में सोच रही हैं।

अस्पताल में उनके पीछे-पीछे पहुंचे विश्वनाथ प्रताप सिंह को भी देखकर उन्होंने कहा कि आप तुरंत लखनऊ लौटिए क्योंकि वहां पर इससे बड़े मसले हल करने के लिए पड़े हैं। जब तक डॉक्टर संजय के क्षत-विक्षत शव को ठीक करने की कोशिश करते रहे, इंदिरा गाँधी उसी कमरे में खड़ी रहीं।

इस बीच हादसे की खबर सुनकर संजय गाँधी की पत्नी मेनका गाँधी भी अस्पताल पहुंच गई थीं। इंदिरा उस कमरे से बाहर निकलीं, जहां संजय का शव ठीक करने की कोशिश हो रही थी।

उन्होंने मेनका को दिलासा दिया और कहा कि वह बगल वाले कमरे में बैठकर इंतजार करें। उन्होंने कैप्टन सक्सेना की पत्नी और माँ को भी दिलासा दिया। संजय के शव को ठीक करने में डॉक्टरों को तीन घंटे लग गए। जब उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया तो इंदिरा ने उनसे कहा कि अब आप मुझे अपने बेटे के पास कुछ मिनटों के लिए अकेला छोड़ दीजिए।

वो थोड़ा झिझके, लेकिन इंदिरा ने उन्हें सख्ती से बाहर जाने के लिए कहा। ठीक चार मिनट बाद वह कमरे से बाहर निकलीं। उस कमरे में गईं जहाँ मेनका बैठी हुई थीं और उन्हें बताया कि संजय अब इस दुनिया में नहीं हैं।

इससे पहले जब डॉक्टर संजय के पार्थिव शरीर को पैच कर रहे थे, तो वो एक बार फिर उस जगह गईं जहाँ संजय का विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। बाद में अफवाह फैल गई कि इंदिरा वहाँ संजय की घड़ी और चाबियों का गुच्छा ढूंढने गई थीं। लेकिन इन अफवाहों में सच्चाई नहीं थी। उनको संजय के निजी सामान में कोई रुचि नहीं थी।

वो वास्तव में संजय को ढूंढ रही थी। धातु के जले हुए मुड़े तुड़े टुकड़ों को देख कर उन्हें अहसास हुआ कि संजय अब कभी वापस नहीं आएंगे। उस जहाज के गिरते ही उनके सारे सपने और संजय के बारे में भविष्य की योजनाएं हमेशा के लिए चकनाचूर हो गई थीं।

वो अपनी देखरेख में संजय के शव को एक अकबर रोड लाईं, जहाँ उसे बर्फ की सिल्लियों पर एक प्लेटफॉर्म पर रखा गया। उनकी एक आंख और सिर पर अभी भी पट्टी बंधी हुई थी और नाक बुरी तरह से कुचली हुई थी।

अगले दिन संजय के अंतिम संस्कार के समय इंदिरा पूरे समय मेनका का हाथ अपने हाथ में लिए रहीं। जैसे ही चिता में आग देने के लिए राजीव ने हाथ आगे बढ़ाया, इंदिरा ने इशारे से उनसे रुकने के लिए कहा।

उन्होंने बताया कि संजय के शरीर से लिपटे कांग्रेस का झंडा हटाया नहीं गया है। शव के ऊपर रखी लकड़ियों को फिर से हटाया गया और झंडे को हटाकर संजय का अंतिम संस्कार किया गया।

25 जून को संजय की अस्थियों को घर लाकर एक अकबर रोड के लॉन में रखा गया। तब पहली बार इंदिरा अपने को रोक नहीं पाईं। उनकी आखों से आंसू बह निकले। पहली बार उन्हें सब के सामने खुलेआम रोते हुए देखा गया। राजीव गाँधी ने अपने हाथों से उनके कंधों को सहारा दिया।

चार दिनों के अंदर यानी 27 जून को इंदिरा साउथ ब्लॉक के अपने दफ्तर में फाइलों पर दस्तखत कर रही थीं जैसे कुछ हुआ ही न हो। राज थापर ने अपनी किताब ऑल दीज इयर्स में लिखा है, संजय की मौत पर लोग रोए और पूरा देश गमगीन हो गया क्योंकि यह दुखद घटना तो थी ही। लेकिन इसे विडंबना ही कहिए कि इसके साथ ही लोगों में एक अजीब किस्म की राहत भी थी जिसे पूरे भारत में महसूस किया गया।।

वर्षों बाद इंदिरा के चचेरे भाई और अमरीका में भारत के राजदूत रहे बीके नेहरू ने भी अपनी किताब नाइस गाइज फिनिश सेकेंड में भी कमोबेश इसी भावना का इजहार किया।

मिनी सुडोकू-2947 का हल

3	4	5	2	1	6
2	6	1	5	3	4
6	3	2	4	5	1
1	5	4	6	2	3
5	1	6	3	4	2
4	2	3	1	6	5

छत्तीसगढ़ शब्द पहेली क्रमांक-4086 का सही उत्तर

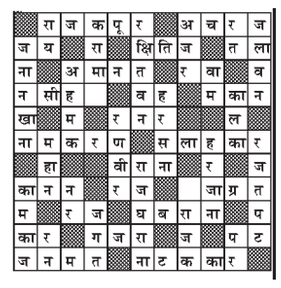

पेज 15 से आगे

जब पिता ने सुनी अपनी मृत बेटी की धड़कन

लेकिन ऐबी ऐसी ही थी। अगर वह आपकी दोस्त थी तो हमेशा आपके साथ रहती थी। वो जरूरतमंद लोगों की मदद करने वाली थी- यही उसका सही परिचय है।

बेटी की मौत के बाद बिल कॉनर ने तय किया कि वह चार हजार किलोमीटर साइकिल चलाकर अंगदान का प्रचार करेंगे और फ्लोरिडा के उस अस्पताल भी जाएंगे जहां उनकी बेटी का शरीर रखा हुआ था।

वह अपनी यात्रा के 2,250 किलोमीटर चल चुके थे, तभी उन्हें पता चला कि वह लॉमंथ जैक से मुलाकात कर सकते हैं, जिन्हें ऐबी का दिल लगाया गया है। जिस अस्पताल में ऐबी का शरीर रखा गया था, वहां से उन चारों लोगों को चिट्ठियां भेजी गईं, जिन्हें ऐबी के शरीर के चार अलग-अलग अंग दान किए गए थे। इन चारों में लॉमंथ जैक भी शामिल थे।

21 साल के लॉमंथ जैक ने बैटन रूग में समाचार वेबसाइट डब्ल्यूएएफबी से कहा, उसने मेरी जान बचाई और मैं इसके बदले कुछ नहीं कर सका। काश मैं ये कर पाता, लेकिन मैं नहीं कर सका। मैं बस उसके परिवार को अपना प्यार दे सकता था। चश्मदीदों ने बताया कि फादर्स डे पर हुई दोनों की यह मुलाकात दिल तोड़ने की हद तक मार्मिक थी।

लुइजियाना की एक अंगदान एजेंसी की प्रवक्ता मैरी क्लेमेनॉक ने कहा, इस पर यकीन नहीं होता। ऐबी के अंगदान से किसी को नई जिंदगी मिल गई। आज बिल अपनी बेटी की धड़कनें सुन पा रहे थे। वह इसे रिकॉर्ड करके सारी जिंदगी अपने पास रख सकते हैं। यह कितना सुंदर है।

मूंछों वाली मां यानी महान शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका

गिजुभाई पेशे से वकील थे, लेकिन बचपन में उनकी परिस्थितियां उनके इतने अनुकूल नहीं थीं। इसलिए उन्हें कॉलेज की शिक्षा बीच में छोड़कर आजीविका के लिए 1907 में पूर्वी अफ्रीका जाना पड़ा। वहां से वापस आने पर उन्होंने कानून की शिक्षा पूरी की और वकालत करने लगे।

गिजुभाई अचानक बालशिक्षा की तरफ तब मुड़े जब एक दिन अपने पुत्र की शिक्षा के सिलसिले में वह छोटे बच्चों के विद्यालय में गए और वहां उन्हें मांटेसरी पद्धति की एक पुस्तक मिली। उसका उन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। इसके बाद तो वे उस तरह की तमाम किताबें ढूंढ-ढूंढकर पढ़ने लगे। जैसे-जैसे पढ़ते गए वैसे वैसे भाव गंगा में डूबते गए। उन्होंने पढ़ी गयीं इन तमाम किताबों से भारतीय परिस्थितियों के अनुसार बच्चों की आरंभिक शिक्षा देने के लिए एक ढांचा गढ़ा। इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम भावनगर में दक्षिणमूर्ति नाम से एक छात्रावास की स्थापना की। उन्होंने इसके लिए अब अपनी वकालत छोड़ दी थी। गिजुभाई के इस काम में उन्हें नाना भाई भट्ट का भरपूर सहयोग मिला। शिक्षा की नई पद्धति के प्रयोग के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण आवश्यक समझकर उन्होंने दक्षिणमूर्ति को अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र का रूप दिया। लेकिन उनका अध्यापकों के अलावा बच्चों की माओं से भी विशेष आग्रह होता था। गांधीजी भी उनकी इस पद्धति से बहुत प्रभावित हुए थे और उन्हें प्राथमिक शिक्षा का प्रयोग -पुरुष कहा करते थे। आज जिसे हम जवाहर नवोदय विद्यालयों की प्राथमिक शिक्षा का मॉडल मानते हैं, वही दरअसल गिजुभाई का प्रायोगिक मॉडल है।

आनंददायी और सहभागी शिक्षा का मॉडल, जिसके अंदर से प्रकट होते हैं सीखने एवं सिखाने के वे तत्व, जिन्हें जिज्ञासा, प्रश्न या तर्क, विश्लेषण, विवेचन, वर्गीकरण, तुलना और निष्कर्ष आदि कहा जाता है। शिक्षा ज्ञान का मात्र अक्षरीकरण नहीं है। गिजुभाई कहते थे कि शिक्षा परिवर्तन की सबसे अधिक प्रभावशाली प्रक्रिया है।

भारतीय शिक्षा आयोग ने 1964-66 में कहा था कि भारतीय प्राथमिक शिक्षा का भविष्य गिजुभाई के मॉडल में है, लेकिन शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त राजनीति ने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जिसके वे वाकई में हकदार हैं। गिजुभाई कोई नियमित शिक्षक नहीं थे और न उन्होंने शिक्षा का कोई प्रशिक्षण लिया था। जिस समय नवाचार, बाल-केंद्रित शिक्षा, आनंददायी एवं सहभागी शिक्षा जैसे मुहावरे भारतीय शिक्षा में शैक्षिक प्रक्रिया, पद्धति या प्रणाली के रूप में मौजूद ही नहीं थे, उस समय गिजुभाई ने तत्कालीन शिक्षा और शिक्षण-पद्धति में सार्थक हस्तक्षेप किया था। शिक्षा के तत्कालीन स्वरूप, संस्था की स्थिति और उसकी कार्य-प्रणाली, शिक्षक एवं उनकी शिक्षा-चेतना, व्यवस्था एवं उसकी शैक्षिक प्राथमिकता, समाज और उसकी शिक्षा के प्रति जिम्मेदारी आदि सभी को अपने प्रयोगों से चकित किया था और शिक्षण एवं शिक्षक दोनों को ही एक नई पहचान दी थी।

ब्रिटिश साम्राज्य उपनिवेश भारत में भारतीय शिक्षा का स्वदेशी और पारंपरिक मॉडल लगभग लुप्त हो चुका था। अंग्रेजी प्रणाली के स्कूल जगह-जगह कायम हो गए थे और शिक्षक सरकारी नौकर के रूप में स्कूलों में शिक्षण कार्य करते थे। बहुत अधिक अंतर नहीं था उस समय के उन स्कूलों में जहां, गिजुभाई ने अपने प्रयोग और नवाचार किए थे और आज के उन स्कूलों में जो आज भी वैसे ही हैं जैसे गिजुभाई के जमाने के स्कूल थे। गिजुभाई के समक्ष स्कूल का कोई ऐसा मॉडल या आदर्श नहीं था, जिसे वे अपना लेते।

गिजुभाई के समक्ष था एक छोटे से कस्बे का वह सरकारी स्कूल, जिसका भवन न भव्य था, न आकर्षक, न बच्चों के आनंद और किलकारी से गूंजती जगह। जिस स्कूल में गिजुभाई ने मास्टर लक्ष्मीशंकर के रूप में एक प्रयोगी शिक्षक की परिकल्पना की थी, वह स्कूल उदासीनता और उदासी की छाया से ग्रस्त था। शिक्षकों में न उत्साह था, न सोच के प्रति संवेदना। गिजुभाई ने सबसे पहले स्कूल के तत्कालीन रूपक को उसकी जड़ता और गतिहीनता से मुक्त किया। प्राथमिक शिक्षा में आनंद की नई वर्णमाला रची, बाल-गौरव की नई प्रणाली रची और कक्षा के भूगोल को समूची पृथ्वी के भूगोल में बदलकर भारतीय शिक्षा का नया इतिहास रचा, नया बाल-मनोविज्ञान रचा और शैक्षिक नवाचारों की वह दिशा एवं दृष्टि रची, जो आज भी प्रासंगिक एवं सार्थक है।

गांधीजी और गिजुभाई दोनों वकील थे, मगर एक ने राष्ट्र की वकालत की, स्वतंत्रता की वकालत की, तो दूसरे ने शिक्षा की वकालत की। गिजुभाई के रोचक और जीवंत मॉडल के लिए जरुरी था कि बच्चों के लिए रोचक ढंग की उपयुक्त पाठ्य सामग्री तैयार की जाए। गिजुभाई ने यह काम भी अपने हाथ में लिया। इसके लिए उन्होंने विभिन्न शैलियों में एक सौ से अधिक पुस्तकों की रचना की। उनकी इन पुस्तकों में से दर्जनों आज भी काम में आ रही हैं। इस तरह उन्होंने बालकथा साहित्य में अद्भुत योगदान दिया है। बच्चों की शिक्षा उनका मुख्य क्षेत्र था, पर समाज सुधार और राष्ट्रीय महत्त्व के अन्य कामों में भी वे पूरी रुचि लेते थे। उन्होंने अपनी संस्था में उस समय हरिजनों को भरपूर प्रवेश दिया।

गिजुभाई का निधन 23 जून, 1939 को हुआ, अपनी जिन्दगी को बच्चों को समर्पित करने वाले महान शिक्षाविद की पुण्यतिथि पर शत शत नमन।

सीखें उपन्यास लिखना- कुमार प्रशांत से

लेकिन यहां श्रीप्रकाश अपनी भूमिका के बारे में ही उलझे हुए हैं। वे लिख रहे हैं उपन्यास और तेवर दिखाते हैं इतिहासकार का!

5. चौरी-चौरा कांड को आधार बना कर लिखे इस उपन्यास के कोई छह सौ पृष्ठों में से बमुश्किल पंद्रह पृष्ठों में यह कांड सिमटा हुआ है, और इन पंद्रह पृष्ठों में भी इस घटना की बाबत कोई भी नया तथ्य और तत्त्व नहीं मिलता है।

6. चौरी-चौरा का ग्रामीण परिवेश और उसके पात्र भी उपन्यास को खासा प्राण-तत्त्व दे सकते थे, लेकिन लेखक का ध्यान अपने पात्रों को गढ़ने, स्थितियों को पकड़ने पर कम और स्त्री-पुरुष की शारीरिकता पर ज्यादा हो तो पन्ने भरते जाते हैं, जगहें खाली की खाली रह जाती हैं।

7. चौरी-चौरा कांड को आधार बना कर लिखे इस उपन्यास के कोई छह सौ पृष्ठों में से बमुश्किल पंद्रह पृष्ठों में यह कांड सिमटा हुआ है, और इन पंद्रह पृष्ठों में भी इस घटना की बाबत कोई भी नया तथ्य और तत्त्व नहीं मिलता है। इसके बाद, इस कांड को छोड़ कर, लेखक देश-दुनिया की उस वक्त की तमाम घटनाओं और हस्तियों को छूने में लग जाता है और उन सबके बारे में सतही किस्म की टिप्पणियां भी करता जाता है।

8. आंचलिकता की बघार और आंचलिक शब्दों की छटा कितने ही उपन्यासों की विशेषता रही है, लेकिन श्रीप्रकाश मिश्र की ऐसी कोशिश भी रंग नहीं लाती है। अधिकतर तो वह आरोपित लगती है। प्रातिनिधान, इत्तिमिथ्यम जैसे शब्द आंचलिक भी नहीं हैं और सशक्त भी नहीं।

अर्थात् उपन्यास कैसे लिखा जाये यह श्रीप्रकाश जी अब कुमार प्रशांत जी से सीखने जायें!

और आदरणीय प्रशांतजी, जब यह उपन्यास है ही नहीं तो फिर आप इसके पीछे क्यों इतना समय गँवा रहे हैं। अपनी समीक्षायी ताकत दिखाने के लिए उसे प्रकाशित भी किये जा रहे हैं। घर बैठिए किसी दूसरे को उपन्यासकार बनाईये, उपन्यास लिखवाईये। क्या आपकी समीक्षा को पढ़कर हम अपना समय भी नहीं गँवाते क्या? यह अतिशयोक्ति न होगी कि श्रीप्रकाश कई कवियों, लेखकों के भी गुरु रहे हैं। मिश्रजी का साहित्यिक दखल कविता, उपन्यास और आलोचना में समान रूप से है। जहाँ बाँस फूलते हैं (मीजो जाति की पृष्ठभूमि पर), रूपतिल्ली की कथा (खासी जनजाति की पृष्ठभूमि पर) को पाठकों और प्रमुख आलोचकों का उल्लेखनीय प्रतिसाद मिल चुका है। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' तो उपेक्षित पूर्वोत्तर पर लिखे गये दो-तीन उपन्यासों में सर्वोपरि है।

बहरहाल यही कि समीक्षा या आलोचना का यह चरित पाठकों को आंतकित और विरक्त करनेवाला है। इसके बचना होगा पाठकों को। पर ऐसा भी नहीं कि ऐसे उपन्यासों को बढ़े बगैर मेरे जैसे किसी पाठक की राय मानकर। खुद पढ़े खुद जान पायें कि दुल्हन वही नहीं जो पिया मन भाये।

गणित का चौराहा - 3006

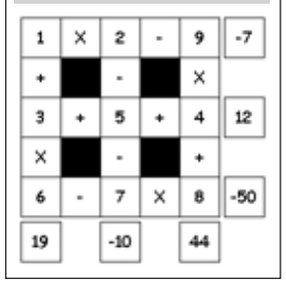

अंक जाल- 2996 का हल

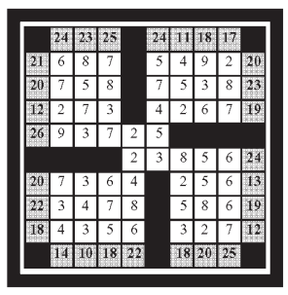

सुडोकू- 4086 का हल (E)

2	3	1	4	6	9	8	5	7
5	6	7	3	1	8	9	4	2
9	4	8	2	7	5	3	1	6
1	7	5	8	9	2	6	3	4
6	9	3	7	5	4	1	2	8
4	8	2	6	3	1	7	9	5
8	5	9	1	2	6	4	7	3
3	1	6	5	4	7	2	8	9
7	2	4	9	8	3	5	6	1

Name, Fame and Game-4006 Solution

अगर आप कुछ नाम ढूंढ न पाए हों तो यहां दिए गए उत्तरों की मदद लें। नामों को आड़ी और खड़ी कतारों के नंबर व उनकी दिशा के आधार पर ढूंढें

(Over,Down,Direction)

BHAIDUJ(5,23,N)
CHHATHPUJA(4,14,E)
DIWALI(8,6,NE)
DUSSEHRA(14,21,NW)
GANESHCHATURTHI(18,15,NW)
GOVERDHAN(10,19,W)
GUDIPADWA(9,15,SE)
HANUMANJAYANTI(18,1,S)
HARTALIKATEEJ(3,14,N)
HOLI(13,7,SE)
KRISHNAJANMASHTAMI(18,24,W)
LOHRI(10,15,E)
MAHASHIVARATRI(5,5,SE)
MAKARSANKRANTI(2,14,NE)
NAGPANCHAMI(6,11,NE)
ONAM(4,8,S)
RAKSHABANDHAN(17,7,W)
RAMNAVAMI(17,8,S)
RATHJATRA(9,11,SW)
VASANTPANCHAMI(2,13,E)
VISHWAKARMAPUJA(1,15,N)